International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

देशभक्त और बहिष्कृत: राष्ट्रवादी आंदोलन के दौरान उत्तर प्रदेश में महिला कैदियों का स्तरीकरण

डॉ प्रियंका तिवारी

सहायक आचार्या, इतिहास एंव सभयता विभाग, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, नोएडा

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहासलेखन में महिलाओं की भागीदारी का मूल्यांकन लंबे समय तक केवल अभिजात्य वर्ग की महिलाओं, उनके द्वारा किए गए सार्वजनिक प्रदर्शनों और उनके त्याग तक ही सीमित रहा है। हालाँकि, इतिहास के इस आख्यान में एक अत्यंत महत्वपूर्ण लेकिन उपेक्षित पहलू महिलाओं का औपनिवेशिक कारावास और जेल की चारदीवारी के भीतर उनका मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और सामाजिक संघर्ष रहा है। यह विस्तृत शोध पत्र उत्तर प्रदेश (तत्कालीन संयुक्त प्रांत) के विशेष संदर्भ में औपनिवेशिक जेल प्रणाली के भीतर महिला कैदियों के स्तरीकरण, उनके कटु अनुभवों, और उनके अदम्य प्रतिरोध का गहन विश्लेषण करता है। यह अध्ययन दर्शाता है कि औपनिवेशिक ब्रिटिश राज्य ने राधिका सिंघा के 'कानून की तानाशाही' के सिद्धांत का उपयोग करते हुए राजनीतिक असंतोष को एक सामान्य आपराधिक कृत्य की श्रेणी में डाल दिया। इसके अतिरिक्त, जेलों में ए, बी, और सी वर्गों का निर्माण केवल प्रशासनिक सुविधा नहीं थी, बल्कि यह नस्ल, वर्ग और जाति के आधार पर भारतीय समाज को विभाजित करने की एक सोची-समझी शाही रणनीति थी। उर्मिला शास्त्री, विजयलक्ष्मी पंडित, राजकुमारी गुप्ता, नानीबाला देवी, और सत्यवती देवी जैसी महिलाओं के संस्मरणों, डायरियों और ऐतिहासिक साक्ष्यों का उपयोग करते हुए, यह पत्र स्पष्ट करता है कि कैसे महिला राजनीतिक कैदियों ने औपनिवेशिक उत्पीड़न और पितृसत्तात्मक सामाजिक बहिष्कार (जैसे समाज और परिवार द्वारा त्याग दिया जाना) के दोहरे मोर्चे पर लड़ाई लड़ी। इसके साथ ही, यह शोध 'राजनीतिक' और 'सामान्य' महिला कैदियों (जो अक्सर हाशिए पर रहने वाले दलित, आदिवासी या गरीब तबके से थीं) के बीच के कृत्रिम विभाजन और उनके अंतर्संबंधों का भी आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है। यह पत्र यह निष्कर्ष निकालता है कि औपनिवेशिक जेल, जिसे ब्रिटिश सत्ता द्वारा अपमान और नियंत्रण के साधन के रूप में डिज़ाइन किया गया था, अनजाने में महिलाओं के लिए राजनीतिक चेतना, नारीवादी एकजुटता और पितृसत्तात्मक सीमाओं के अतिक्रमण का एक अनूठा केंद्र बन गया। इसके अतिरिक्त, यह शोध औपनिवेशिक जेल नीतियों की उत्तर-औपनिवेशिक निरंतरता का भी परीक्षण करता है, जहाँ आधुनिक भारतीय राज्य आज भी राजनीतिक विरोधियों को दबाने के लिए उन्हीं दमनकारी औपनिवेशिक रणनीतियों का उपयोग कर रहा है।

मुख्य शब्द: राष्ट्रवादी आंदोलन, महिला कैदी, औपनिवेशिक जेल प्रणाली, स्तरीकरण, लिंग और वर्ग, राजनीतिक कैदी, सविनय अवज्ञा, सामाजिक बहिष्कार

1. प्रस्तावना और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान, विशेषकर 1920 से 1947 के बीच, महिलाओं की बड़े पैमाने पर राजनीतिक लामबंदी ने भारतीय समाज के पारंपरिक पितृसत्तात्मक ढांचे को झकझोर कर रख दिया। यद्यपि 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भी बेगम हज़रत महल, रानी लक्ष्मीबाई और झलकारी बाई जैसी वीरांगनाओं ने उत्तर प्रदेश (अवध और बुंदेलखंड क्षेत्रों) में ब्रिटिश सत्ता को कड़ी चुनौती दी थी[1], लेकिन बीसवीं शताब्दी में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) ने आम मध्यमवर्गीय महिलाओं को भी घर की चारदीवारी (पर्दा प्रथा) से निकालकर सार्वजनिक राजनीतिक क्षेत्र में ला खड़ा किया[3]।

इस राजनीतिक जागरण की कीमत महिलाओं को कारावास के रूप में चुकानी पड़ी। ऐतिहासिक आंकड़ों के अनुसार, 1930-31 के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किए गए 80,000 से अधिक लोगों में से लगभग 17,000 महिलाएं थीं, जो कुल गिरफ्तारियों का 20 प्रतिशत से अधिक था[6]। कुल मिलाकर 1920 से 1947 के बीच गांधीवादी आंदोलनों में लगभग 20,000 महिलाओं को गिरफ़्तार किया गया, जिनमें से 15,000 से अधिक महिलाओं को लंबी सजा सुनाई गई[3]।

उत्तर प्रदेश (तत्कालीन संयुक्त प्रांत) इस राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल का एक प्रमुख केंद्र था। यहाँ की महिलाओं ने न केवल विदेशी कपड़ों और शराब की दुकानों पर धरना दिया, नमक कानून तोड़ा, बल्कि गुप्त क्रांतिकारी गतिविधियों में भी अदम्य साहस का परिचय दिया[7]। लेकिन जब ये महिलाएं ब्रिटिश औपनिवेशिक जेलों की सलाखों के पीछे पहुंचीं, तो उनका सामना एक ऐसी क्रूर दंडात्मक प्रणाली से हुआ जो पूरी तरह से पुरुष-केंद्रित, नस्लवादी, और सामाजिक-आर्थिक पदानुक्रम पर आधारित थी।

यह शोध पत्र इस बात की गहन पड़ताल करता है कि औपनिवेशिक जेलों में महिलाओं का वास्तविक अनुभव कैसा था और राज्य ने उन्हें किस प्रकार वर्गीकृत किया। सुरुचि थापर-ब्योर्कर्ट जैसे प्रमुख विद्वानों ने यह तर्क दिया है कि जेल महिलाओं के लिए केवल शारीरिक कारावास या यातना का स्थान नहीं था, बल्कि यह नारी समुदाय और प्रतिरोध का एक स्थल बन गया था[7]। जेल ने महिलाओं के भीतर एक नई राजनीतिक पहचान को जन्म दिया। हालाँकि, यह अनुभव सभी महिलाओं के लिए समान या समरूप नहीं था। उच्च और मध्यम वर्ग की 'राजनीतिक' कैदियों और गरीब, हाशिए पर रहने वाली 'सामान्य' (आपराधिक) कैदियों के बीच एक गहरी खाई मौजूद थी[11]। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य औपनिवेशिक उत्तर प्रदेश की प्रमुख जेलों (जैसे नैनी, मेरठ, आगरा, और बनारस) में महिला कैदियों के इस जटिल स्तरीकरण, उनके द्वारा सहे गए शारीरिक व मानसिक आघात, उनके सामाजिक बहिष्कार, और उनके द्वारा किए गए प्रतिरोध के बहुआयामी स्वरूप का विस्तृत विश्लेषण करना है।

2. औपनिवेशिक जेल व्यवस्था: 'कानून की तानाशाही' और अपराध का राजनीतिकरण

भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक जेल प्रणाली का विकास केवल अपराध को नियंत्रित करने या समाज को सुरक्षित रखने के लिए नहीं किया गया था, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य साम्राज्यवादी सत्ता को मजबूत करना और भारतीय जनमानस पर पूर्ण मनोवैज्ञानिक व शारीरिक नियंत्रण स्थापित करना था।

2.1 1857 के पश्चात दंडात्मक नीतियों में बदलाव

1857 के विद्रोह से पूर्व, ब्रिटिश नीतियां कुछ हद तक सभ्यता मिशन के आवरण में लिपटी थीं, जहां भारतीयों को भोला और सुधार योग्य माना जाता था। लेकिन 1857 के व्यापक विद्रोह के बाद ब्रिटिश दृष्टिकोण में आमूलचूल परिवर्तन आया। भारतीयों को अब विश्वासघाती, खतरनाक और सुधार के अयोग्य माना जाने लगा[12]। इसके परिणामस्वरूप, औपनिवेशिक सरकार ने महसूस किया कि

उन्हें राजद्रोह की किसी भी घटना को पनपने से पहले ही कुचलने के लिए लौह-हस्त नीति की आवश्यकता है। जेलों को अब एक ऐसे टैंक के रूप में देखा जाने लगा, जहां समाज के खतरनाक और राजद्रोही तत्वों को अलग-थलग करके रखा जा सके और उन पर यूरोपीय अनुशासन थोपा जा सके[12]। अंडमान की सेलुलर जेल और झारखंड की हज़ारीबाग सेंट्रल जेल जैसे स्थानों को राजनीतिक कैदियों के दमन के लिए प्रयोगशालाओं में बदल दिया गया[12]।

2.2 राजनीतिक असंतोष का सुनियोजित अपराधीकरण

राधिका सिंघा के कानून की तानाशाही के सिद्धांत का प्रयोग करते हुए हम समझ सकते हैं कि कैसे ब्रिटिश राज्य ने कानूनी ढांचे का उपयोग अपनी संप्रभुता थोपने और राजनीतिक असंतोष को आपराधिक कृत्य में बदलने के लिए किया[7]। डेविड अर्नोल्ड का भी यह तर्क है कि औपनिवेशिक शासन के तहत, राजनीति और अपराध को जानबूझकर मिला दिया गया था; राजनीतिक प्रतिरोध को अक्सर अपराधीकरण का जामा पहनाया जाता था[13]।

सविनय अवज्ञा आंदोलन का मुकाबला करने के लिए, ब्रिटिश सरकार ने 1930 में मानक कानूनी प्रक्रियाओं को दरकिनार करते हुए कई कठोर अध्यादेश लागू किए। इनमें प्रेस अध्यादेश, अनधिकृत समाचार पत्र अध्यादेश, और गैरकानूनी संघ अध्यादेश शामिल थे, जिन्होंने न केवल बोलने की स्वतंत्रता को कुचला बल्कि महिलाओं सहित हजारों प्रदर्शनकारियों की अंधाधुंध गिरफ्तारी का मार्ग प्रशस्त किया[14]। इसके अतिरिक्त, आर्थिक जबरदस्ती की रणनीति के तहत, सत्याग्रहियों पर भारी जुर्माना लगाया जाता था। जब कार्यकर्ता जुर्माना नहीं चुकाते थे, तो पुलिस कुर्की का सहारा लेती थी, एक दंडात्मक उपाय जिसमें घरों को सील करना, घरेलू जानवरों की नीलामी करना और खड़ी फसलों को जलाना शामिल था[14]। इस प्रकार, औपनिवेशिक राज्य ने निगरानी और संस्थागत अनुशासन के माध्यम से भारतीय शरीरों (विशेषकर विद्रोही महिलाओं के शरीरों) पर नियंत्रण स्थापित किया[12]।

3. महिला कैदियों का स्तरीकरण: ए, बी, और सी वर्ग

औपनिवेशिक जेलों की सबसे प्रमुख और विवादास्पद विशेषता कैदियों का त्रि-स्तरीय वर्गीकरण था। यह वर्गीकरण अपराध की गंभीरता पर कम, और कैदी की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षा, जीवन स्तर, नस्ल और चरित्र पर अधिक आधारित था। 1930 के दशक तक, आंदोलनों के कारण जेलों में अत्यधिक भीड़ बढ़ने के कारण, ब्रिटिश सरकार ने राजनीतिक कैदियों को प्रबंधित करने और उनके बीच फूट डालने के लिए इस वर्गीकरण प्रणाली को और अधिक कठोर कर दिया[16]।

कैदी वर्ग	वर्गीकरण के मानदंड	प्राप्त सुविधाएं और जेल की स्थिति
वर्ग ए	गैर-आदतन अपराधी, अच्छे चरित्र वाले, उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के व्यक्ति, और अक्सर राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख राजनीतिक नेता।[14]	बेहतर और पौष्टिक भोजन, घर से किताबें और पत्र मंगाने की अनुमति, अपने कपड़े पहनने की छूट, और कठोर शारीरिक श्रम से पूरी तरह मुक्ति।[13]
वर्ग बी	यूरोपीय, एंग्लो-इंडियन, और वे भारतीय कैदी (मध्यम वर्गीय) जिनका	सामान्य कैदियों से काफी बेहतर रहने की स्थिति, लेकिन ए वर्ग की तुलना में

	जीवन स्तर और शिक्षा सामान्य जेल आबादी से उच्च मानी जाती थी।[18]	कम विशेषाधिकार।[19]
वर्ग सी	वे सभी व्यक्ति जो ए या बी वर्ग की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करते थे। इसमें सामान्य अपराधी, गरीब किसान, मजदूर और निम्न जाति की महिलाएं शामिल थीं।[19]	अत्यधिक भीड़भाड़ वाले और अस्वच्छ कक्ष, घटिया भोजन (जिसमें पत्थर और मिट्टी मिली होती थी), अपर्याप्त पानी, और कठोर शारीरिक श्रम।[11]

तालिका 1 का स्रोत: ए, बी और सी वर्ग की परिभाषाएं और उनके वर्गीकरण के मानदंड औपनिवेशिक जेल नीतियों का विश्लेषण करने वाले ऐतिहासिक दस्तावेज़ों से लिए गए हैं[13]। इन विभिन्न वर्गों (विशेषकर सी वर्ग) में मिलने वाली सुविधाओं और अमानवीय स्थितियों का विवरण महिला स्वतंत्रता सेनानियों के व्यक्तिगत संस्मरणों और जेल सुधारों पर हुए शोध लेखों से प्राप्त किया गया है[11]।

3.1 वर्गीकरण के अंतर्निहित शाही निहितार्थ और नैतिक संदूषण का भय

यह वर्गीकरण प्रणाली ब्रिटिश साम्राज्य की नस्लीय श्रेष्ठता और फूट डालो और राज करो की नीति का एक सूक्ष्म संस्थागत विस्तार थी। जेल प्रशासन ने नैतिक संदूषण के डर का हवाला देते हुए इस वर्गीकरण को उचित ठहराया[15]। औपनिवेशिक अधिकारियों और तत्कालीन नैतिकता का मानना था कि उच्च वर्ग की सम्मानित और पवित्र महिलाओं (राजनीतिक कैदियों) को निम्न वर्ग की आपराधिक और भ्रष्ट महिलाओं से दूर रखा जाना चाहिए ताकि उनका चारित्रिक पतन न हो[14]।

हालांकि, व्यवहार में, यह प्रणाली राजनीतिक कैदियों को प्रताड़ित करने का एक हथियार बन गई। कई सम्मानित और शिक्षित राजनीतिक महिलाओं को जानबूझकर 'सी' वर्ग में रखा गया ताकि उन्हें अपमानित किया जा सके, उनका मनोबल तोड़ा जा सके और उन्हें आंदोलन से अलग किया जा सके[21]। उर्मिला शास्त्री और विजयलक्ष्मी पंडित जैसी महिलाओं ने अपने संस्मरणों में स्पष्ट रूप से लिखा है कि कैसे जेल अधिकारियों ने उन्हें सामान्य महिला अपराधियों के साथ रखकर उनकी राजनीतिक पहचान को मिटाने का कुत्सित प्रयास किया[11]।

4. राजनीतिक बनाम सामान्य अपराधी: एक कृत्रिम विभाजन और अंतर्संबंध

औपनिवेशिक भारत में राजनीतिक कैदी की अवधारणा राज्य और राष्ट्रवादी आंदोलनकारियों के बीच संघर्ष का एक प्रमुख वैचारिक बिंदु बन गई[23]। राष्ट्रवादियों ने यह स्थापित करने का प्रयास किया कि वे कोई आम अपराधी नहीं हैं, बल्कि देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले सत्याग्रही और देशभक्त हैं। दूसरी ओर, औपनिवेशिक राज्य ने उन्हें लंबे समय तक केवल कानून तोड़ने वाले, उपद्रवी या बम फेंकने वाले माना, ताकि उनके संघर्ष को वैधानिकता न मिल सके[12]।

4.1 महिलाओं के लिए इस विभाजन का अर्थ और प्रतिच्छेदन

जब महिलाएं जेल गईं, तो यह विभाजन और भी जटिल हो गया। अधिकांश राजनीतिक महिला कैदी उच्च या मध्यम वर्ग, और उच्च जातियों से आती थीं, जो लंबे समय तक घरों के भीतर संरक्षित जीवन जी रही थीं[5]। जब उन्होंने पहली बार घर की दहलीज पार की और जेल पहुंचीं, तो उनका सामना सीधे तौर पर 'सी' वर्ग की उन महिलाओं से हुआ जो हत्या, चोरी, या वेश्यावृत्ति के

आरोप में जेल में थीं।

उर्मिला शास्त्री की पुस्तक 'माई डेज़ इन प्रिज़न - कारागार' से यह स्पष्ट होता है कि इन दोनों अत्यंत भिन्न समूहों का सह-अस्तित्व कैसा था। यह सहवास केवल दंडात्मक नहीं था, बल्कि इसने पितृसत्तात्मक समाज के उन गहरे और छिपे हुए अन्यायों को उजागर किया, जिनके कारण कई गरीब और हाशिए पर रहने वाली महिलाओं को मजबूरी के चलते जेल में डाल दिया गया था[25]। राजनीतिक महिलाओं ने जब इन सामान्य कैदियों की दुर्दशा देखी, तो उन्हें लिंग, वर्ग और व्यवस्थागत उपेक्षा के प्रतिच्छेदन का गहरा अहसास हुआ[25]।

4.2 पदानुक्रम, जातिगत विशेषाधिकार और औपनिवेशिक सहभागिता

जेल के भीतर भी जाति और वर्ग की संरचनाएं पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई थीं। औपनिवेशिक प्रशासन अक्सर जेल के भीतर काम कराने के लिए सजायाफ्ता कैदियों को ही वॉर्डर या ओवरसियर के रूप में नियुक्त करता था। ये मजबूर मध्यस्थ जेल प्रशासन और कैदियों के बीच की कड़ी होते थे[26]।

जातिगत पदानुक्रम का एक ज्वलंत उदाहरण हमें नानीबाला देवी के मामले में मिलता है। जब नानीबाला देवी को प्रताड़ित करने के बाद कलकत्ता लाया गया, तो उन्होंने जेल में एक अन्य महिला राजनीतिक कैदी दुकरीबाला को कठोर श्रम से बचाने के लिए अपनी ब्राह्मण पहचान का उपयोग किया। नानीबाला ने जेल अधिकारियों से कहा कि वह केवल दुकरीबाला द्वारा पकाया गया भोजन ही खाएंगी, इस प्रकार उन्होंने उसे कठोर श्रम से बचा लिया[19]। यह घटना दर्शाती है कि जेल के भीतर भी जाति व्यवस्था का पालन किया जा रहा था[28]।

5. उत्तर प्रदेश (संयुक्त प्रांत) में महिला कार्यकर्ताओं का अनुभव: यातना, साहस और सामाजिक बहिष्कार

उत्तर प्रदेश की जेलें—नैनी, आगरा, मेरठ, बनारस, और लखनऊ—राष्ट्रवादी महिलाओं के लिए यातना और संघर्ष के प्रमुख केंद्र बन गईं।

5.1 उर्मिला शास्त्री और मेरठ जेल: भ्रष्टाचार और उत्पीड़न का दस्तावेजीकरण

1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान, 21 वर्षीय उर्मिला शास्त्री को मेरठ में गिरफ्तार किया गया[21]। मजिस्ट्रेट ने उन्हें माफी मांगने पर रिहा करने की पेशकश की, लेकिन उर्मिला ने माफी मांगने से इनकार कर दिया और राष्ट्र के लिए छह महीने जेल की सजा चुनी[10]। उन्हें मेरठ जेल में 'सी' वर्ग की महिला अपराधियों के साथ अमानवीय परिस्थितियों में रखा गया। अपनी डायरी 'कारागार' में, शास्त्री ने जेल अधिकारियों और वॉर्डनों द्वारा किए जाने वाले व्यवस्थित भ्रष्टाचार का निर्भीकता से पर्दाफाश किया[11]।

5.2 विजयलक्ष्मी पंडित और नैनी सेंट्रल जेल: महिला होने की दोहरी सजा

नेहरू परिवार की प्रमुख सदस्य विजयलक्ष्मी पंडित ने 1932, 1941 और 1942 में कई बार जेल की सजा काटी[20]। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्हें इलाहाबाद की नैनी सेंट्रल जेल में रखा गया था। अपनी पुस्तक 'प्रिज़न डेज़' में, उन्होंने जेल के उन अमानवीय अनुभवों का दस्तावेजीकरण किया है जिनका सामना महिलाओं को विशेष रूप से महिला होने के कारण करना पड़ा। महिलाओं के लिए भोजन पुरुष खंड में पकाया जाता था और बाद में महिलाओं की बैरक में लाया जाता था, जिसमें अक्सर धूल और मिट्टी मिली होती थी[20]। महिलाओं को जर्जर संरचनाओं में रखा जाता था, और उन्हें प्रति दिन केवल नौ आना का भत्ता मिलता था[19]।

5.3 नानीबाला देवी और बनारस जेल की अमानवीय यातना

नानीबाला देवी का कारावास और यातना का सबसे खौफनाक हिस्सा उत्तर प्रदेश की बनारस जेल में बीता[18]। 1818 के विनियमन 3 के तहत राज्य कैदी घोषित होने वाली वह संभवतः पहली महिला थीं[10]। बनारस जेल में ब्रिटिश पुलिस ने गुप्त जानकारी उगलवाने के लिए उनके जननांगों में पिसी हुई लाल मिर्च भर दी[33]। इस अमानवीय यातना के बावजूद, नानीबाला देवी ने अपना मुंह नहीं खोला। उन्हें एक भूमिगत दंड कक्ष में रखा गया, जहां वे कई बार बेहोश हो गईं[31]। रिहाई के बाद भी, उनके परिवार ने उन्हें अपनाने से इनकार कर दिया और उन्होंने अत्यधिक गरीबी में जीवन बिताया[10]।

5.4 राजकुमारी गुप्ता: काकोरी षड्यंत्र और सामाजिक बहिष्कार

कानपुर की राजकुमारी गुप्ता का जीवन जेल की यातना और सामाजिक बहिष्कार दोनों के दोहरे आघात का एक ज्वलंत उदाहरण है[36]। 9 अगस्त 1925 के ऐतिहासिक काकोरी ट्रेन एक्शन में उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी[36]। एक दिन जब वे कपड़ों के नीचे आग्नेयास्त्र छिपाकर काकोरी के क्रांतिकारियों को देने जा रही थीं, तब उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया[37]। गिरफ्तारी के बाद, उनके ससुराल वालों ने एक स्थानीय समाचार पत्र में नोटिस छपवाकर उनसे सभी संबंध तोड़ लिए और उन्हें घर से निकाल दिया[5]।

5.5 सत्यवती देवी: भारत की जोन ऑफ आर्क

सत्यवती देवी ने दिल्ली और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में राष्ट्रवादी आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्हें उनकी अदम्य ऊर्जा के कारण गांधीजी ने तूफानी बहन और अन्य लोगों ने भारत की जोन ऑफ आर्क कहा था[40]। 1932 के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान जेल के अस्वच्छ वातावरण में उन्हें प्लुरिसी और तपेदिक जैसी जानलेवा बीमारियां हो गईं[35]। अत्यधिक बीमार होने के बावजूद, उन्होंने ब्रिटिश सरकार को वह अच्छे व्यवहार का बांड भरने से साफ इनकार कर दिया, जो उनकी रिहाई का रास्ता खोल सकता था[27]। 9 अक्टूबर 1942 को लाहौर जेल में सत्यवती, उनकी बेटी सुभद्रा और अन्य महिलाओं ने जेल के भीतर अपने कपड़ों से एक तिरंगा झंडा बनाया और यूनियन जैक को हटाकर कांग्रेस का तिरंगा फहरा दिया[44]।

5.6 लाडो रानी जुत्शी का प्रांतीय संघर्ष

जवाहरलाल नेहरू की रिश्तेदार, लाडो रानी जुत्शी ने अपनी बेटियों के साथ व्यापक स्तर पर महिलाओं का नेतृत्व किया[45]। लाडो रानी को यह कहकर रिहा नहीं किया गया कि वे एक आवारा हैं। 1932 में तिहाड़ जेल में उन्होंने राजनीतिक कैदियों के खराब व्यवहार के खिलाफ भूख हड़ताल की, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अंबाला जेल भेजकर एकांतवास की सजा दी गई[45]।

प्रमुख महिला कैदी	संबद्ध जेल / क्षेत्र	संघर्ष और यातना का स्वरूप
उर्मिला शास्त्री	मेरठ जेल	'सी' क्लास में रखा गया, जेल भ्रष्टाचार का विरोध, बीमारी में इलाज का अभाव, डायरी लिखी।[10]
विजयलक्ष्मी पंडित	नैनी सेंट्रल जेल	नौ आना भत्ता, अस्वच्छता, घटिया भोजन, महिलाओं की उपेक्षा का दस्तावेजीकरण।[9]

नानीबाला देवी	बनारस जेल, कलकत्ता जेल	1818 के विनियमन 3 के तहत पहली महिला राज्य कैदी, शारीरिक यातना, 21 दिन की भूख हड़ताल।[33]
राजकुमारी गुप्ता	कानपुर / काकोरी	हथियार तस्करी, बच्चे के साथ गिरफ्तारी, परिवार द्वारा पूर्ण सामाजिक बहिष्कार।[36]
सत्यवती देवी	दिल्ली / लाहौर जेल	टीबी से ग्रसित, इलाज हेतु बांड भरने से इनकार, जेल में तिरंगा फहराया।[40]
लाडो रानी जुत्शी	तिहाड़ / अंबाला जेल	भूख हड़ताल, एकांतवास, सह-कैदियों का उनके समर्थन में जेल में रुकना।[45]

तालिका 2 का स्रोत: यह तालिका लेख में विस्तार से प्रस्तुत किए गए विभिन्न ऐतिहासिक अध्ययनों का एक संक्षिप्त सारांश है। अलग-अलग महिला कैदियों की जानकारी उर्मिला शास्त्री की जेल डायरी 'कारागार'[11], विजयलक्ष्मी पंडित के संस्मरण 'प्रिज़न डेज़'[20], नानीबाला देवी पर औपनिवेशिक पुलिस यातनाओं के ऐतिहासिक रिकॉर्ड[31], राजकुमारी गुप्ता के साक्षात्कारों[36], सत्यवती देवी के जीवन दस्तावेज़ों[40], और लाडो रानी जुत्शी के ऐतिहासिक विवरणों[45] से जुटाई गई है।

6. पितृसत्ता, औपनिवेशिक राज्य और पुलिस दमन का त्रिकोण

महिला कैदियों के अनुभव का विश्लेषण करते समय हमें उस त्रिकोणीय उत्पीड़न को नहीं भूलना चाहिए जिसका उन्होंने सामना किया:

1. **औपनिवेशिक दमन:** पुलिस की लाठियां, अमानवीय जेल की स्थिति, एकांतवास, और शारीरिक यातना।
2. **पितृसत्तात्मक संरचना:** महिलाओं का घर से बाहर निकलना तत्कालीन समाज में मर्यादा के खिलाफ माना जाता था। सुरुचि थापर-ब्योर्कर्ट स्पष्ट करती हैं कि राष्ट्रवादी विचारधारा के लिए, सड़क की महिलाओं (वेश्याओं) और सड़क पर उतरी महिलाओं (राजनीतिक कार्यकर्ताओं) के बीच के अंतर को बनाए रखना एक बड़ी चुनौती थी[5]। महिलाओं को सीता, सावित्री और भारतमाता के प्रतीकों के रूप में महिमामंडित किया गया[5]।
3. **सामाजिक बहिष्कार:** जेल जाने का अर्थ अक्सर सामाजिक कलंक से जुड़ जाता था। राजकुमारी गुप्ता जैसे उदाहरण स्पष्ट रूप से बताते हैं कि कैसे पितृसत्तात्मक परिवार अपने सम्मान को बचाने के लिए राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाली महिलाओं को त्याग देते थे[3]।

ब्रिटिश पुलिस ने महिलाओं को गिरफ्तार करने के बजाय उन पर दूर से लाठियां बरसाने या उन्हें पीटने की रणनीति अपनाई ताकि समाज में महिलाओं की पवित्रता और सम्मान के भंग होने का डर पैदा किया जा सके[9]। आगरा में जब श्रीमती पार्वती देवी और सुखदेवी पालीवाल ने कोतवाली के सामने धरना दिया, तो पुलिस ने उन्हें बर्बरता से लाठियों से पीटा, लेकिन वे अपनी जगह से नहीं हटीं[23]।

7. जेल के भीतर प्रतिरोध और नारीवादी एकजुटता

सुरुचि थापर-ब्योर्कर्ट के अध्ययन से पता चलता है कि यद्यपि जेल का मुख्य उद्देश्य कैदियों को शारीरिक रूप से अलग-थलग करना और उनके मनोबल को तोड़ना था, लेकिन महिलाओं ने इस स्थान को प्रतिरोध और एकजुटता के नेटवर्क में बदल दिया[9]। जेल में रहते हुए, दुनिया से कटी हुई महिलाओं ने आपसी भाईचारे और सामूहिकता के गहरे बंधन बनाए[14]। उन्होंने चरखा कातना, खादी बनाना, देशभक्ति की कविताएँ लिखना शुरू किया, जिसे थापर-ब्योर्कर्ट सार्वजनिक क्षेत्र का घरेलूकरण और घरेलू क्षेत्र का राजनीतिकरण कहती हैं[5]।

राजनीतिक महिलाओं ने औपनिवेशिक जेल मैनुअल के नियमों का सीधा और सामूहिक उल्लंघन किया। अरुणा आसफ अली ने 1932 में दिल्ली की जेल में राजनीतिक कैदियों की अमानवीय स्थितियों के खिलाफ भूख हड़ताल की[49]। इन कार्यवाहियों ने ब्रिटिश अधिकारियों की उस रूढ़िवादी सोच को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया कि भारतीय महिलाएं केवल कमजोर, अधीन और विनम्र हैं[5]।

8. जेल सुधार, उत्तर-औपनिवेशिक निरंतरताएं और समकालीन प्रासंगिकता

भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात, यह एक स्वाभाविक उम्मीद थी कि स्वतंत्र भारत का राज्य जेल व्यवस्था में क्रांतिकारी सुधार करेगा। विडंबना यह है कि स्वतंत्र भारत का राज्य भी राजनीतिक असंतोष को दबाने के लिए काफी हद तक औपनिवेशिक दमनकारी तंत्र (निवारक निरोध, गैरकानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम, राष्ट्रीय सुरक्षा कानून आदि) का ही सहारा लेता रहा[23]।

8.1 स्वतंत्रता सेनानी बनाम समकालीन राजनीतिक कैदी

उज्जवल कुमार सिंह के व्यापक शोध के अनुसार, आज़ाद भारत में राज्य ने उन लोगों को स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा देकर महिमामंडित किया जिन्होंने औपनिवेशिक राज के खिलाफ संघर्ष किया था, लेकिन इसने समकालीन राजनीतिक विरोधियों को राजनीतिक कैदी का दर्जा देने से साफ इनकार कर दिया[52]।

8.2 1970 का दशक और आपातकाल

1970 के दशक में, नक्सलबाड़ी आंदोलन और बाद में आपातकाल के दौरान हजारों महिला राजनीतिक कार्यकर्ताओं को उत्तर प्रदेश, बंगाल और देश के अन्य हिस्सों में जेलों में ठूंस दिया गया[53]। शर्मिला पुरकायस्थ अपनी पुस्तक में गहराई से बताती हैं कि कैसे आज़ाद भारत में भी महिलाओं को हिरासत में असीमित राज्य हिंसा, यौन प्रताड़ना और एकांतवास का सामना करना पड़ा[53]। पुलिस और जेल वॉर्डनों ने उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जो जेल अधिकारियों की एक प्रकार की वास्तविक संप्रभुता थी[34]।

8.3 आधुनिक भारतीय जेलों में लिंग, जाति और वर्ग

वर्तमान समय में भी, भारतीय जेलों में महिला कैदियों की स्थिति अत्यंत निराशाजनक बनी हुई है। आंकड़ों के अनुसार, जेलों में दलित, आदिवासी और मुस्लिम महिलाओं का अनुपात उनकी जनसंख्या के अनुपात से कहीं अधिक है[51]। इनमें से अधिकांश महिलाएं विचाराधीन कैदी हैं[51]। आज भी, ठीक औपनिवेशिक काल की तरह, जेल के भीतर जाति आधारित श्रम स्पष्ट रूप से मौजूद है, जहाँ साफ-सफाई का काम अक्सर निम्न जाति की महिलाओं से कराया जाता है[58]। पारलैंगिक व्यक्तियों के लिए तो जेल प्रणाली और भी अधिक अदृश्य और क्रूर है[33]। आधुनिक मानवाधिकार कार्यकर्ताओं के जेल संस्मरण इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारतीय जेलें आज भी पितृसत्तात्मक, सामंती और जातिवादी मानसिकता का सूक्ष्म रूप हैं[18]।

9. निष्कर्ष

औपनिवेशिक उत्तर प्रदेश में राष्ट्रवादी आंदोलन के दौरान महिलाओं के कारावास का ऐतिहासिक अध्ययन केवल औपनिवेशिक दमन का इतिहास नहीं है, बल्कि यह महिलाओं के अदम्य साहस, उनके राजनीतिक विकास और पितृसत्तात्मक सीमाओं के अतिक्रमण का एक अत्यंत जीवंत और प्रेरक प्रलेख है।

ब्रिटिश साम्राज्य ने जेल का इस्तेमाल एक दमनकारी उपकरण के रूप में किया। 'ए, बी और सी' वर्गों में स्तरीकरण की नीति ने भारतीय समाज के मौजूदा वर्ग और जाति आधारित विभाजनों को कानूनी और संस्थागत रूप दे दिया[13]। उर्मिला शास्त्री और विजयलक्ष्मी पंडित के संस्मरण यह प्रामाणिक रूप से सिद्ध करते हैं कि 'सी' वर्ग में बंद सामान्य और गरीब महिलाओं का जीवन अत्यंत नारकीय और अपमानजनक था[11]।

राजकुमारी गुप्ता का उनके ही परिवार द्वारा किया गया निर्मम सामाजिक बहिष्कार और नानीबाला देवी पर बनारस जेल में की गई नृशंस यातनाएं इस बात का अकाट्य प्रमाण हैं कि इन महान महिलाओं को एक साथ दो मोर्चों पर अपना खून बहाना पड़ रहा था[18]। इन अकल्पनीय कठिनाइयों के बावजूद, महिलाओं ने जेल की ऊंची दीवारों के भीतर एक अनूठी एकजुटता का निर्माण किया[23]।

हालांकि, यह ऐतिहासिक आख्यान आज भी हमें एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न के सामने लाकर खड़ा करता है कि जिन औपनिवेशिक दमनकारी कानूनों के खिलाफ महिलाओं ने संघर्ष किया, वे आज भी स्वतंत्र भारत के दंडात्मक ढांचे का हिस्सा क्यों बने हुए हैं। समकालीन भारत में हाशिए पर रहने वाली महिलाओं का जेलों में असंगत कारावास यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि औपनिवेशिक काल की कानून की तानाशाही आज भी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है[7]। अतः, राष्ट्रवादी आंदोलन में महिला कैदियों के संघर्षों को याद करना एक अधिक समतामूलक और न्यायपूर्ण समाज की दिशा में काम करने के लिए एक आवश्यक और निरंतर प्रेरणा है।

सन्दर्भ

1. छाबड़ा, एस. (2015). इन सर्च ऑफ फ्रीडम: जर्नीज़ थ्रू इंडिया एंड साउथ-ईस्ट एशिया. हार्पर कॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया. (स्रोत 124, 125)
2. थापर-ब्योर्कर्ट, एस. (1998). जेंडर, नेशनलिज्म एंड द कॉलोनियल जेल: ए स्टडी ऑफ विमेन एक्टिविस्ट्स इन उत्तर प्रदेश. विमेंस हिस्ट्री रिव्यू, 7(4), 583-615. (स्रोत 3, 16, 26, 27, 30, 53, 67, 104, 122)
3. थापर-ब्योर्कर्ट, एस. (2006). विमेन इन द इंडियन नेशनल मूवमेंट: अनसीन फेसेस एंड अनहर्ड वॉयसेस, 1930-42. सेज पब्लिकेशन्स. (स्रोत 1, 33, 105, 121, 130)
4. पंडित, वी. एल. (1946). प्रिज़न डेज़. सिगनेट प्रेस. (स्रोत 17, 73)
5. पुरकायस्थ, एस. (2023). ऑफ़ कैप्टिविटी एंड रेजिस्टेंस: विमेन पॉलिटिकल प्रिजनर्स इन पोस्टकोलोनियल इंडिया. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. (स्रोत 38, 103)
6. शास्त्री, यू. (2012). माई डेज़ इन प्रिज़न - कारागार. हार्पर कॉलिंस. (स्रोत 11, 68, 96, 99, 101)
7. सिंह, यू. के. (1998). पॉलिटिकल प्रिजनर्स इन इंडिया. स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज, कैम्ब्रिज. (स्रोत 9, 28, 44, 71, 106, 108)
8. सिंघा, आर. (1998). ए डेस्पोटिज्म ऑफ लॉ: क्राइम एंड जस्टिस इन अर्ली कॉलोनियल इंडिया. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

(स्रोत 50, 64)

9. सेंगुप्ता, एन. (2010). विमेन एम्पावरमेंट इन प्री-इंडिपेंडेंस इंडिया. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशनल रिसर्च. (स्रोत 5)
10. हसन, एम. (सं.). (1998). इस्लाम, कम्युनिटीज एंड द नेशन: मुस्लिम आइडेंटिटीज इन साउथ एशिया एंड बियॉन्ड. मनोहर पब्लिशर्स. (स्रोत 64)

Works cited

1. Eminent Freedom Fighters & Personalities of UP - ForumIAS UPPSC, https://forumias.com/blog/uppsc/eminent-freedom-fighters-personalities-of-up/
2. Freedom Fighters of Uttar Pradesh » LotusArise IAS, https://lotusarise.com/psc/freedom-fighters-of-uttar-pradesh-uppsc/
3. Volume:15, Issue:1(7), January 2026 223 BEYOND THE HOUSEHOLD: GANDHI'S VISION FOR WOMEN'S ECONOMIC INDEPENDENCE AND SOCIAL PARTI - Amazon S3, http://s3-ap-southeast-1.amazonaws.com/ijmer/pdf/volume15/volume15-issue1(7)/18.pdf
4. 1 TIMELINE: INDIAN FREEDOM MOVEMENT FROM 1919 TO 1938 - Vision IAS, https://cdn.visionias.in/value_added_material/6b809-freedom-movement.pdf
5. Women's participation in the national movement in 1930_1942,a case study on Midnapore - JETIR.org, https://www.jetir.org/papers/JETIR2201569.pdf
6. Amma's Daughters: A Memoir - Athabasca University Press, https://www.aupress.ca/app/uploads/120274_99Z_Shrivastava_2018-Ammas-Daughters.pdf
7. Of Captivity and Resistance: Women Political Prisoners in Colonial India (1915–1947) - The Academic, https://theacademic.in/wp-content/uploads/2025/12/32.pdf
8. Women's Participation In The National Movement In The United Provinces, 1937-47 - Manushi, https://manushi.in/wp-content/uploads/2022/11/pdfs_issues/PDF%20files%2046/women's_participation_in_the_national_movement.pdf
9. Gender, nationalism and the colonial jail: a study of women activists in Uttar Pradesh - Taylor & Francis, https://www.tandfonline.com/doi/pdf/10.1080/09612029800200182
10. Gender, nationalism and the colonial jail: a study of women activists in Uttar Pradesh, https://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1080/09612029800200182
11. 2321-5488 - ReseaRch DiRections issn,

http://www.researchdirections.org/abstractread.php?id=1382

12. Prejudice, Punishment, and Protest: The Carceral Experience under Colonial Rule in India, https://museumofbritishcolonialism.org/prejudice-punishment-and-protest-the-carceral-experience-under-colonial-rule-in-india/
13. https://museumofbritishcolonialism.org/prejudice-punishment-and-protest-the-carceral-experience-under-colonial-rule-in-india/#:~:text=Class%20A%20contained%20%E2%80%9Cnon%2Dhabitual,in%20A%20or%20B%20Class.
14. Untitled - TIJ, https://knowledge.tijthailand.org/uploads/publication/file/20190513/en-abchjrvyz089.pdf
15. (PDF) Colonial Carcerality: Classificatory Logics and Gender in the Prison Regime of Colonial India - Academia.edu, https://www.academia.edu/39777338/Colonial_Carcerality_Classificatory_Logics_and_Gender_in_the_Prison_Regime_of_Colonial_India
16. From Political Prisoner to Security Prisoner (Chapter 5) - Gentlemanly Terrorists, https://www.cambridge.org/core/books/gentlemanly-terrorists/from-political-prisoner-to-security-prisoner/9AD763E4C866F45712EB455B0B582FCB
17. Red Scare (Chapter 6) - Revolutionary Pasts - Cambridge University Press & Assessment, https://www.cambridge.org/core/books/revolutionary-pasts/red-scare/1E716656373D7232F3AB02C1025CE3CD
18. Women Political Prisoners: Caged, Still Striving for Change, https://pucl.org/manage-writings/women-political-prisoners-caged-still-striving-for-change/
19. Gender, nationalism and the colonial jail: a study of women activists in Uttar Pradesh, https://scispace.com/papers/gender-nationalism-and-the-colonial-jail-a-study-of-women-2gxa0ymktk
20. "She Kept a Diary to Keep Herself Going..." | NewsClick, https://www.newsclick.in/Prison-Days-Vijaya-Lakshmi-Pandit-Nayantara-Sahgal-Indian-Freedom-Movement
21. असाधारण प्राधिकार से प्रकाशित भाग I केन्द्र-शासि - eGazette Ladakh, https://egazette.ladakh.gov.in/WriteReadData/2021/18.pdf
22. My Days In Prison - Karagar by Urmila Shastri on Apple Books, https://books.apple.com/us/book/my-days-in-prison-karagar/id1170250169

23. Political Prisoners in India - SciSpace, https://scispace.com/pdf/political-prisoners-in-india-2dhb3vdiwf.pdf
24. Manmath Nath Gupta: Imprisonment & Sedition | PDF | Prison | Flagellation - Scribd, https://www.scribd.com/document/939050106/Political-Prisoners-in-India-School-of-Oriental-and-African-Singh-Ujjwal-Kumar-SOAS-Studies-on-South-Asia-Understandings-and-Perspectives
25. Role of Women in India's Struggle For Freedom - E-Magazine....::, https://magazines.odisha.gov.in/Orissareview/2010/August/engpdf/74-76.pdf
26. Caught In-Between: Coerced Intermediaries in the Jails of Colonial India | International Review of Social History | Cambridge Core, https://www.cambridge.org/core/journals/international-review-of-social-history/article/caught-inbetween-coerced-intermediaries-in-the-jails-of-colonial-india/0C55B0786D7A8FED463904DFD4634AB0
27. Caught In-Between: Coerced Intermediaries in the Jails of Colonial India* - Cambridge University Press & Assessment, https://www.cambridge.org/core/services/aop-cambridge-core/content/view/0C55B0786D7A8FED463904DFD4634AB0/S0020859023000044a.pdf/caught_inbetween_coerced_intermediaries_in_the_jails_of_colonial_india.pdf
28. Suruchi Thapar-Björkert - Uppsala universitet, https://www.uu.se/kontakt-och-organisation/personal?query=N10-403
29. CONTRIBUTION OF WOMEN IN INDIAN FREEDOM MOVEMENT DURING 1920-1947, https://ierj.in/journal/index.php/ierj/article/download/4253/4988/9062
30. Power Dynamics and the Failure of Reform: Systemic Obstacles to Genuine Justice in Urmila Shastri's Memoir, https://saudijournals.com/media/articles/SIJLL_811_285-294.pdf
31. VOICE OF THE SILENT INCARCERATION: NANIBALA DEVI, https://tssreview.in/wp-content/uploads/2025/10/29-Nupur-Karmakar.pdf
32. Remembering Nanibala Devi - The Jaipur Dialogues, https://www.thejaipurdialogues.com/remembering-nanibala-devi/
33. Gender, nationalism and the colonial jail: a study of women activists in Uttar Pradesh, https://www.semanticscholar.org/paper/Gender%2C-nationalism-and-the-colonial-jail%3A-a-study-Thapar-Bj%C3%B6rkert/3653995181457a07bd418f330a9c1cc03cd0e530
34. International Military Tribunal for the Far East - Wikipedia, https://en.wikipedia.org/wiki/International_Military_Tribunal_for_the_Far_East

35. Women in the Indian National Movement: Unseen Faces and Unheard Voices, 1930-42 [1 ed.] 0761934065, 9780761934066 - DOKUMEN.PUB, https://dokumen.pub/women-in-the-indian-national-movement-unseen-faces-and-unheard-voices-1930-42-1nbsped-0761934065-9780761934066.html
36. Rajkumari Gupta - Wikipedia, https://en.wikipedia.org/wiki/Rajkumari_Gupta
37. Rajkumari Gupta: Meet The Woman Who Sacrificed a Relationship for India's Freedom, https://thebetterindia.com/191530/rajkumari-gupta-kakori-woman-freedom-fighter-independence-india/
38. Unsung heroines of Independence - The Hindu, https://www.thehindu.com/news/cities/Delhi/unsung-heroines-of-independence/article3764609.ece
39. 16 forgotten women freedom fighters who earned us our independence as much as their male counterparts | Catch News, https://www.catchnews.com/national-news/16-forgotten-women-freedom-fighters-who-earned-us-our-independence-as-much-as-their-male-counterparts-1439547106.html
40. Satyavati Devi - Wikipedia, https://en.wikipedia.org/wiki/Satyavati_Devi
41. Satyavati Devi - ChakraFoundation.Org, https://chakrafoundation.org/satyavati-devi/
42. The History of Doing | PDF | Feminist Movement | Codification (Law) - Scribd, https://www.scribd.com/document/480207176/The-History-of-Doing
43. A hand-book to the English pre-mutiny records in the government record rooms of the United provinces of Agra and Oudh - Wikimedia Commons, https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/5/5a/A_hand-book_to_the_English_pre-mutiny_records_in_the_government_record_rooms_of_the_United_provinces_of_Agra_and_Oudh_%28IA_handbooktoenglis00dewa%29.pdf?utm_source=commons.wikimedia.org&utm_campaign=index&utm_content=original
44. The Women Of The Lahore Jail Resistance - Feminism in India, https://feminisminindia.com/2026/04/20/the-lahore-jail-resistance-and-the-women-history-forgot/
45. Reminiscing The Indomitable Spirit of Women in India's Freedom Struggle - The Womb, https://www.thewomb.in/reminiscing-the-indomitable-spirit-of-women-in-indias-freedom-movement/

46. Movement Leaders from Harinder Kaur Bindu to Bibi Amtus Salam - The Citizen, https://www.thecitizen.in/index.php/en/newsdetail/index/7/20101/movement-leaders-from-harinder-kaur-bindu-to-bibi-amtus-salam--
47. Movements Strengthen and Liberate Women and Women Strengthen Movements - Janata Weekly, https://janataweekly.org/movements-strengthen-and-liberate-women-and-women-strengthen-movements/
48. The Congress and Indian Nationalism: Historical Perspectives [3, 1 ed.] 9781138229297, 9781315201795, 9781138284302, 9781315269597, 0700702091, 0913215708 - DOKUMEN.PUB, https://dokumen.pub/the-congress-and-indian-nationalism-historical-perspectives-3-1nbsped-9781138229297-9781315201795-9781138284302-9781315269597-0700702091-0913215708.html
49. Aruna Asaf Ali | Life, Freedom Struggle, Quit India Movement, History, Facts, & Awards, https://www.britannica.com/biography/Aruna-Asaf-Ali
50. Feisty Freedom Fighter: Aruna Asaf Ali - Millennial Matriarchs, https://millennialmatriarchs.com/2025/08/14/feisty-freedom-fighter-aruna-asaf-ali/
51. Intersectionality In Carceral Spaces: Rights Of Women Prisoners In India | Virtuosity Legal, https://virtuositylegal.com/intersectionality-in-carceral-spaces-rights-of-women-prisoners-in-india/
52. Suruchi Thapar-Björkert - Uppsala University, https://www.uu.se/en/contact-and-organisation/staff?query=N10-403
53. Women's Resistance in Postcolonial India | PDF | Prison | Justice - Scribd, https://www.scribd.com/document/953276102/Sharmila-Purkayastha-Of-Captivity-and-Resistance-Women-Political-Prisoners-in-Postcolonial-India-2023-Cambridge-University-Press-10-1017-978100
54. The Emergency (India) - Wikipedia, https://en.wikipedia.org/wiki/The_Emergency_(India)
55. Torture and Laughter: Naxal insurgency, custodial violence, and inmate resistance in a women's correctional facility in 1970s Calcutta | Modern Asian Studies | Cambridge Core, https://www.cambridge.org/core/journals/modern-asian-studies/article/torture-and-laughter-naxal-insurgency-custodial-violence-and-inmate-resistance-in-a-womens-correctional-facility-in-1970s-calcutta/23DC07BB194FFAAB4D26223F6ABE7C26
56. Conclusion - Cambridge University Press & Assessment,

https://resolve.cambridge.org/core/services/aop-cambridge-core/content/view/71BEEA2156599DCE67658946D2B8D973/9781009273176c8_p255-280_CBO.pdf/conclusion-solidarity-politics-and-poetics.pdf

57. Freedom Deferred: Caste, class and faith in India's prisons - CJP, https://cjp.org.in/freedom-deferred-caste-class-and-faith-in-indias-prisons/
58. The Hero of Sugamo Prison - The Nippon Foundation, https://en.nippon-foundation.or.jp/app/uploads/2026/04/en_ind_dee_20260420_04.pdf
59. Criminal Justice for World War II Atrocities in China - Torkel Opsahl Academic EPublisher, https://www.toaep.org/pbs-pdf/29-zhang
60. Seema Azad's “Unsilenced - The Jail Diary of an Activist” - People's Union For Civil Liberties, https://pucl.org/manage-writings/seema-azads-unsilenced-the-jail-diary-of-an-activist/